श्री झण्डे वाली माता का चालीसा

जय माता की

जय माता की

श्री झण्डे वाली माता
का
चालीसा

।। दोहा ।।

श्री माता झण्डे वाली, पाप प्रहारिणी मात।
कलि के काल निवाड़ी, दिल्ली में प्रख्यात।।
हे मैया मुझ दास को; देना यह वरदान।
चालीसा वर्णन करूं, करूं सदा गुणगान।

॥ चौपाई ॥

जय जय जय झण्डे वाली माई। तेरी महिमा जग ने गाई॥
दिल्ली में तूही मात विराजत। झण्डे वाले पर डंका बाजत॥
बद्री भगत को सुपना आया। अपना तूने स्थान बताया॥
दिल्ली में है पर्वत भारी। दक्षिण दिशा है उसकी न्यारी॥
देवों हाथों कूप बनाया। अपना माँ ने स्थान बताया॥
बद्री भगत ने खोदी खाई। उसमें निकली झण्डे वाली माई॥
साँची सुची सुशीला रानी। आदि शक्ति माँ आदि भवानी॥

सुआ चोला अङ्ग विराजे। लाल किनारी झालर लागे॥

दायें हाथ में खड़ग विराजे। बायें हाथ खप्पर है साजे।।
चुन चुन पत्थर भवन बनाया। ऊपर माँ का झण्डा फहराया।।
दूर दूर से आतुर आये। रज रज माँ के दर्शन पाये।।
अस्सु चैत नवरातों आये। दर्श करत जन अति सुख पाये।।
महिमा माँ की है अति भारी। जो जन बनकर आये भिखारी।।
ध्यानु भक्त तेरे दर आया। सवा लाख संगत को लाया।।
दिया यहाँ पर डेरा लाई। सब संगत जै जै कार बुलाई।।
यवनों ने तब चुगली खाई। जा अकबर को वचन सुनाई।।
ध्यानु भक्त एक भक्त कहावे। सोना चाँदी वहाँ चढवावे।।

इतना माल खजाने नाई। जितना वहाँ पर दिया चढ़ाई।।
तब अकबर को गुस्सा आई। आकर दीना रोब जमाई।।
क्या है नाम तुम्हारा भाई। किस कारण तुम फौजें लाई।।
कौन है भाई दुश्मन तेरा। यहाँ पर क्यों लाया है डेरा।।
कौन देश का रहने वाला। ठग कर खाता है मतवाला।।
तब ध्यानु ने वचन सुनाये। क्यों राजा गुस्से में आये।।
शहर निधौने धाम हमारा। वहाँ का हूँ मैं रहने वाला।।
दर्शन करने आया ज्वाला माई। इसीलिए ये संगत लाई।।

तू क्यों पाखण्डी बतलाई। ये है सच्ची ज्वाला माई।।

जो जन इसके दर्शन पावे। सुख सम्पति परम सुख पावे।।
अकबर को जो गुस्सा। आई लेउ परीक्षा इसकी भाई।।

॥ दोहा ॥

दिल्ली पति सम्राट की, बुद्धि हुई मलीन।
यश सुन झण्डे वाली का, आन परीक्षा लीन।।

ध्यानु का घोड़ा मंगवाया: काट शीश उसका फिकवाया।।
ध्यानु को लालकिले पहुँचाया। वहाँ पर उसने पहरा लगाया।।

कोई न यहाँ से जाने पावे। जब तक इसकी मात न आवे।।

संगत ने भी टेर लगाई। सुमरी सब ने ज्वाला माई।।

ध्यानु भक्त जब मात पुकारी। चौंक पड़े लंगूर बलकारी।।

लंगूर सोवत मात जगाई। भीड़ पड़ी भक्तन पर माई।।

ध्यानु भक्त है दास तुम्हारा। जाके उसको देओ सहारा।।

जब मैया निज कला दिखाई। रूप कन्या का लिया बनाई।।

घोड़े का जब शीश मिलाया। संयत जय जय कार बुलाया।।

देख अचम्भा यवन घबराए। अकबर भी फिर शीश झुकाई।।

जय जय शब्द सब यवन पुकारा। पूजा भेंट करत जग सारा।।

ध्यानु चल ज्वाला जी आया। वहाँ पर माँ का दर्शन पाया।।
यवनों ने फिर सलाह मिलाई। माता जी के दिये हाथ कटाई।।
बद्री भगत को सुपना दीना। यवनों ने मेरे संग छल कीना।।

॥ दोहा ॥

चोरों ने मेरी भुजा, दोनों लीनी काट।
जब तक तुम आओ नहीं, खुले न कपट कपाट।।

॥ चौपाई ॥

बद्री भक्त तब उठकर धाये। नंगे पैरों यहाँ पर आये।।

देखा यहाँ पर भक्तों का टीला। एक भक्त तब उनसे बोला।।
क्या है बात हमें बतलाओं। सारा भेद हमें समझाओ।।
बद्री भक्त जब वचन सुनाई। सुन लो अब तुम मेरे भाई।।
चार चोर हैं यहाँ पर आये। जिन्होंने माँ पर वार चलाये।।
काटे हाथ शक्ति महामाई। अन्धा उनको दिया बनाई।।
अब तुम उनको कुछ मत कहना। माता का यह वचन है सहना।।
बद्री भक्त जब फाटक खोले। भक्त जय माता की बोले।।
चोर जब निकले हैं अन्दर से। समान सब छीन लिया उनसे।।

बद्री भक़्त को चिन्ता भारी। रात दिना रहे सोच विचारी।।

तब माता सुपने में आयी। बद्री भक्त को दिया समझाई।।
भक्त ऊपर भवन बना दे। मन की चिंता सभी हटा दे।।

।। दोहा ।।

एक बात बद्री भक्त, लेना मेरी मान।
नीचे की प्रतिमा, को न देना यहाँ से जान

।। चौपाई ।।

बद्री भक्त तब मन ठहराई। दीना ऊपर भवन बनाई।।
ऊपर माँ की मूर्ति बिठलाई। जिसकी चार भुजा हैं भाई।।

श्वेत सिंह पर है असवारी। चर्तुभुजी प्रतिमा है प्यारी।।
एक हाथ में खाँडा साजे। दूजे हाथ में शंख विराजे।।
हाथ तीसरे खप्पर सोहे। चौथे हाथ त्रिशूल मन मोहे।।
सकल जगत की रचने वाली। सब दुष्टों को मारन वाली।।
दूर दूर से भक्त हैं आते। सब चरणों में शीश झुकाते।।
नाम आपका जपे निरन्तर। श्रद्धा में नहीं रखते अन्तर।।
जो जन आये तेरे द्वारे। उन भक्तों को पार उतारे।।
सिंह वाहिनी प्यारी अम्बे। जय हो तेरी जय जगदम्बे।।
तन मन धन सब अर्पण तेरे। अवगुण दूर करो माँ मेरे।।

भटक भटक में थकिया हारा। अब पाया मैं तेरा द्वारा।।
कृपा करो मो को अपनाओ। निज चरण में मात लगाओ।।
चालीस दिन जो द्वारे आवे। मुँह मँगिया वो मुराद पावे।।

॥ दोहा ॥

चालीस चालीस दिवस प्रातः मोद मन लाय।
झण्डे वाली माता आकर करे सहाय।।
मन इच्छा फल देत है झण्डे वाली मात।
'राम' भक्त है राम तब हरदम रखना पास।।

मां दुर्गा जी की आरती

ऊँ जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी।। जय अम्बे गौरी।

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को। मैया............
उज्जवल से दोऊ नैना, चन्द्र बदन नीको।। 1 ।। जय...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। मैया............
रक्त पुष्प गलमाला, कण्ठन पर साजे।। 2 ।। जय...

केहरिवाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। मैया............
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी।। 3 ।। जय...

कानन कुण्डल सोभित, नासाग्रे मोती। मैया............
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।।4 ।। जय...

शुम्भ निशुम्भ विदारे महिषासूर घाती। मैया............
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती।। 5 ।। जय...

चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों।। मैया............
बाजत ताल मृदंगा, अरू बाजत डमरू।। 6 ।। जय...

भुजा चार अति शोभित, अष्ट भुजा धारी। मैया............
मनवाँछित फल पावत, सेवत नर नारी।। 7 ।। जय...

कन्चन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मैया............
श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन. ज्योति।। 8 ।। जय...

श्री आदि शक्ति जी की आरती, जो कोई नर गावे मैया............
कहत शिवानन्द स्वामी, मनवाँछित फल पावे।। 9 ।। जय...

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।

तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिव जी।। जय अम्बे गौरी।

जानकी दास बुकसेलर
कनॉट प्लेस हनुमान मंदिर–दिल्ली

सप्रेम भेंटः–
मूल्य :– प्रतिदिन पढ़ें